Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 5, May - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 18/05/2021 **Accepted on : 29/05/2021** **Publication Date: 31/05/2021**

भारतीय राजनीतिक इतिहास में मुस्लिम समाज

Dr. Nusrat Jabeen Siddiquee
Assistant Professor, Institute - Mirza Ghalib College, Gaya, Magadh University.
Email – nusratjabeens@gmail.com

सारांश (Abstract): सांस्कृतिक स्तर पर मुस्लिम समाज भारतीय सामासिक संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत के मुसलमान सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थ में अपने भारतीयता की भावना से दूर नहीं जा सकते। उनकी नैतिकता जिस हद तक इस्लामी है, उसी हद तक भारतीय भी है। उनका मुस्लिमपन उनके भारतीयता को पूरी तरह बहा नहीं ले जा सकता। इस्लामी दुनिया भी उन्हें भारतीय मुसलमान के रूप में लेती है। भारतीय समाज में मुस्लिम समाज की उपस्थिति एवं उसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। भारत में मुसलमान आक्रमणकारियों व शासक वर्गों से पहले सूफियों के अलग- अलग सम्प्रदाय का आगमन आरम्भ हो चुका था। भारत में इस्लाम का आगमन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना तो है ही, इतना ही महत्वपूर्ण घटना सांस्कृतिक दृष्टि से भी है। ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो इन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक घटनाओं को पूर्ण रूप से नकार देना चाहता हैं, और लगातार यह साबित करते रहते हैं कि मुसलमान एक विदेशी कौम है। कुछ ऐसे सांस्कृतिक व राजनैतिक दल हैं, जोकि भारतीय संस्कृति को एक धर्म विशेष की संस्कृति के रूप में परिभाषित कर देना चाहते हैं। यदि ऐसा होता है तो भारतीय भू- भाग पर सैकड़ों सालों से रह रहे तमाम धर्मों, सम्प्रदायों एवं पंथों को अनदेखा करने की बात होगी। उनके विचारों को नकारने की बात होगी।

मूल शब्द (Key Words) :- साझी संस्कृति, बँटवारे, संरक्षण, राजनीतिक-आर्थिक नीति, मुगल साम्राज्य, साम्प्रदायिक मदान्धता, आंतरिक संरचना, वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था, अस्पृश्यों, ब्राह्मण परम्परा, विरासत, प्रतिक्रिया, संरक्षण, विधि व्यवस्था, वंशानुगत एकाधिकारवाद, भौतिक उत्पादन, सामाजिक चेतना, भक्ति आंदोलन, दरगाहों एवं खानकाहों, उलमा, सहिष्णुता, अशराफ, अप्रवासी, अजलाफ, धर्मान्तरण, शिजरा, अभिजात वर्ग, असहिष्णु, भद्रवर्गीय, सामंजस्य, पुनरुत्थान, अयह रुढ़िवादी, सहधर्मियों, बहुसंख्यक, धर्मनिरपेक्षता।

1. प्रस्तावना (Introduction) :-

भारतीय समाज की बुनावट साझी संस्कृति एवं साझे मूल्यों से बनी है, जिसका भारतीय मुस्लिम समाज अभिन्न हिस्सा है। भारतीय समाज में मुस्लिम समाज की उपस्थिति एवं उसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ, लेकिन बँटवारे के घाव के साथ। बँटवारे के बाद भारत में रह गए साढ़े चार करोड़ मुसलमान, जिन्होंने भारत को ही अपने वतन के रूप में चुना, उनकी समस्याओं एवं त्रासदी से 21वीं सदी का भारत मुँह नहीं मोड़ सकता। भारत में इस्लाम को लोकप्रिय बनाने में सूफियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। या यूं कहे कि इतनी बड़ी तादाद में लोगों ने इस्लाम धर्म को अपनाया इसका श्रेय इन सूफी संतों को ही जाता है। इनकी प्रसिद्धि का कारण इनका गैर इस्लामिक चरित्र था। ये सूफी निम्न वर्ग में सबसे अधिक लोकप्रिय हुए; क्योंकि इन्होंने सामाजिक एकता को मजबूती प्रदान की। बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी घटना आजादी और विभाजन है। मुस्लिम समाज की बहुसंख्यक आबादी इसी देश में रह गयी। आगे चलकर जिसके कंधों पर विभाजन की जिम्मेदारी थोप दी गयी। यह मुस्लिम आबादी भारतीय समाज में शक और नफरत के बीच अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है।

2. अध्ययन क्षेत्र :-

भारतीय राजनीतिक इतिहास में मुस्लिम समाज

भारतीय समाज की बुनावट साझी संस्कृति एवं साझे मूल्यों से बनी है, जिसका भारतीय मुस्लिम समाज अभिन्न हिस्सा है। भारतीय समाज में मुस्लिम समाज की उपस्थिति एवं उसकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ, लेकिन बँटवारे के घाव के साथ। बँटवारे के बाद भारत में रह गए साढ़े चार करोड़ मुसलमान, जिन्होंने भारत को ही अपने वतन के रूप में चुना, उनकी समस्याओं एवं त्रासदी से 21वीं सदी का भारत मुँह नहीं मोड़ सकता। ''यह बात शायद ही लोगों को सही प्रतीत होती है कि भारत में मुसलमानों की जितनी संख्या है उतनी संख्या किसी भी इस्लाम को मानने वाले देश में नहीं है। इसके बावजूद अनेक शताब्दियों के बीत जाने पर भी भारत के बहुत से लोग उनको बाहरी तत्व मानते हैं।''[i]

इस्लाम मध्य एशिया के बहुत से देशों से घुमता हुआ भारत पहुँचा। भारत में मुसलमानों के आगमन को तीन चरण में बांटा जा सकता है। सबसे पहले मुसलमान भारत के दक्षिणी हिस्से में व्यापारी बन कर आए, जोकि मूलतः अरब के थे। ये अरब व्यापारी स्थानीय शासकों के संरक्षण में व्यापार करते थे। इन व्यापारिक संबंधों के कारण ही भारत बाहरी दुनिया के आकर्षण का केन्द्र बना, क्योंकि भारत की अपार धन सम्पदा एवं संसाधनों की खबर अरब देशों को लगी। दिलचस्प बात यह है कि अरबी आक्रमण दक्षिण भारत की बजाय सिंध पर हुआ। तीसरा चरण तुर्कों के आक्रमण का है

जिसका मकसद भारत के बेशुमार दौलत को लूटना था। ''उत्तरी भारत पर तुर्की विजय ने भारत की जनता पर गहरा असर डाला तथा लोग मुसलमानों को आक्रमणकारी व हमलावर मानने लगे।''[ii]

कुतुबुद्दीन ऐबक से पहले के मुस्लिम शासक आक्रमणकारी के रूप में सामने आते हैं, जिनका उद्देश्य भारत की अपार धन सम्पदा को लूटना था। ये मुस्लिम शासक विजय के उपरांत धन-सम्पत्ति समेटकर अपने किसी वफादार गुलाम को उत्तराधिकारी बनाकर वापस अपने वतन लौट जाया करते थे। सन् 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने मध्य एशिया के राजनीतिक-आर्थिक नीति से अपने को अलगाते हुए भारत में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसके परिणामस्वरूप भारत के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरूआत होती है। भारत के लिये यह सौभाग्य की बात थी क्योंकि इस प्रकार वह मध्य एशिया की राजनीति से अलग रहा।[iii]

इतिहास में अगली महत्वपूर्ण घटन 20 अप्रैल 1526 ई. को पानीपत की लड़ाई में बाबर द्वारा दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराना था, जिसने अगले 200 सालों के लिए मुगल साम्राज्य को भारत में स्थापित कर दिया। ''बाबर ने राज्य की एक नयी अवधारणा प्रस्तुत की जो शासक के सम्मान और शक्ति पर आधरित थी, जिसमें धार्मिक और साम्प्रदायिक मदान्धता का अभाव था तथा संस्कृति और ललित कलाओं की उन्नति व पोषण की पूरी व्यवस्था थी।''[iv]

भारत में मुसलमानों के आगमन के समय भारतीय समाज की आंतरिक संरचना में वर्णव्यवस्था ने कठोर जाति व्यवस्था का रूप ले लिया था। समाज में शूद्रों एवं अस्पृश्यों की संख्या बढ़ती जा रही थी, जिन्हें घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। समाज में ब्राह्मणों का शीर्ष स्थान था जिनके पास विस्तृत अधिकार थे। ''मुसलमानों के आक्रमण के समय भारत में ऐसे बहुत से लोग थे जो हिन्दू धर्म और कठोर ब्राह्मण परम्परा के प्रति निष्ठावान नहीं थे और इस्लाम के समानता वाले कानूनों को पाने के लिए अपनी विरासत को छोड़ने के लिए तैयार थे। इस्लाम ने विजयी हिन्दू प्रतिक्रिया के अत्याचारों से पीड़ित लोगों को संरक्षण प्रदान किया।''[v]

प्रो. इरफान हबीब ने अपनी पुस्तक 'भारतीय इतिहास में मध्यकाल' में दिल्ली सल्तनत के तहत होने वाले सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों की चर्चा की है। इस दौर में नगरों का विकास, भवन-निर्माण, दस्ताकारी उत्पादन में वृद्धि, वाणिज्य में विस्तार आदि तेजी से हुआ। दूसरी तरफ, ''इस्लामी विधि व्यवस्था तथा परम्परा के तहत व्यवसायों के संदर्भ में किसी भी प्रकार के वंशानुगत एकाधिकारवाद को कोई स्वीकृति नहीं थी तथा कोई दरवेश भी पेशेवर बुनकर हो सकता था (किंतु भद्र पुरुष यकीनन नहीं) और फिर भी वह दरवेश के रूप में प्रशंसनीय भी हो सकता था।''[vi] जिसके फलस्वरूप ना सिर्फ भौतिक उत्पादन को बढ़ावा मिला, बल्कि इसका सामाजिक प्रभाव भी पड़ा। इस युग में बुनकरों तथा दूसरे कारीगरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ, जिसने उनके भीतर सामाजिक चेतना को जगाया। अतः कहा जा सकता है कि इस पूरे माहौल ने उस महान आंदोलन को जन्म दिया, जिसे 'भक्ति आंदोलन' के नाम से अभिहित किया जाता है।

भारत में इस्लाम को लोकप्रिय बनाने में सूफियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। या यूं कहे कि इतनी बड़ी तादाद में लोगों ने इस्लाम धर्म को अपनाया इसका श्रेय इन सूफी संतों को ही जाता है। इनकी प्रसिद्धि का कारण इनका गैर इस्लामिक चरित्र था। ये सूफी निम्न वर्ग में सबसे अधिक लोकप्रिय हुए; क्योंकि इन्होंने सामाजिक एकता को मजबूती प्रदान की। इनकी दरगाहों एवं खानकाहों में हिंदू-मुसलमान साथ-साथ रहते थे। ''उलमा दलितों व काफिरों को नीची नजरों से देखते उनसे घृणा करते। इसके विपरीत सूफी सहिष्णुता का प्रचार करते तथा शासकों को सलाह देते कि वे हिन्दुओं व मुसलमानों के साथ एक समान व्यवहार करें।''[vii]

प्रो. मुबारक अली ने मध्यकालीन मुस्लिम समाज की बुनावट को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि मुस्लिम समाज दो हिस्सों में बँटा था, पहला, अशराफ इस श्रेणी में अप्रवासी कुलीन मुसलमान थे, दूसरा अजलाफ इस श्रेणी में निम्न वर्ग आता था जिन्होंने धर्मान्तरण के बाद इस्लाम कबूल किया। ''उच्च मुस्लिम जातियाँ अपनी शुद्धता के बारे में सचेतन थीं। खासकर शादी-विवाह के मामले में रक्त और जाति की शुद्धता की जांच की जाती। निम्न जातियों के साथ शादी-विवाह नीची नजर से देखा जाता अपनी वंशावली तथा रक्त की शुद्धता प्रमाणित करने के लिए परिवार गर्व के साथ 'शिजरा' रखते। छोटी जातियों से विवाह संबंध शुद्धता को प्रदूषित करता और इससे पारिवारिक मर्यादा घटती।''[viii] मध्यकालीन मुस्लिम समाज में स्थानीय मुसलमानों को कभी बराबरी का दर्जा नहीं मिला और ना ही उनकी नियुक्ति दरबार में उच्च पदों पर होती थी।

अंग्रेजों के भारत आगमन से भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरूआत होती है। जिसके प्रभाव से भारतीय समाज में एक नयी हलचल पैदा हुई। अंग्रेजों द्वारा सत्ता पर काबिज होते ही जो मुस्लिम अभिजात वर्ग शासन में था वह शासित वर्ग में बदल गया। मुगलों के विघटन के बाद मुस्लिम समाज गतिहीन हो गया था। किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने की उर्जा उसमें नहीं थी। अंग्रेजों ने अपने रणनीति के तहत अपने शासन को उचित ठहराने के लिए, साबित करना शुरू किया कि पूरा मध्यकाल गैर मुसलमानों के लिए असहिष्णु था। दूसरा, मुसलमान आधुनिकता के विरोधी है। इनकी संस्कृति ज्ञान के रास्ते का सबसे बड़ा रोड़ा है। इसीलिए अंग्रेजी शासन के जरिए ही आधुनिकता तथा पाश्चात्य सभ्यता से जुड़ा जा सकता है, जोकि भारतीयों के लिए वरदान है। ''सांस्कृतिक व धार्मिक मोर्चों पर मुस्लिम समाज पर विशेष रूप से आक्रमण हुआ। मुसलमानों के लिए यह पहली गम्भीर चुनौती थी क्योंकि अब तक राजनीतिक सत्ता उनके हाथ में होने के कारण राज्य विरोधियों से उन्हें सुरक्षित रखता था और उनकी आलोचना नहीं होती थी राज्य सत्ता खोने के बाद वे असुरक्षित हो गए और उन पर हर तरफ से हमले शुरू हुए।''[ix]

इस बदली हुई परिस्थिति में भद्रवर्गीय मुसलमानों ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया और उत्तर प्रदेश मुस्लिम राजनीति का केन्द्र बन गया। इस दौर में भी मुस्लिम समाज विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर बँटा था। यहाँ यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि यह अभिजात वर्गीय मुसलमान सामान्य मुस्लिम जनता से कटा हुआ था। इन अभिजात्य वर्गीय मुसलमानों में ब्रिटिश शासन के संबंध में भी मतभेद था। सर सैयद पहले मुसलमान थे

जिन्होंने आधुनिक मूल्यों के साथ इस्लामिक शिक्षाओं के सामंजस्य की बात करते हैं। सर सैयद इस्लाम के पुनरुत्थान की बात नहीं करते हैं बल्कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को ग्रहण करने की बात करते हैं। "एक व्यक्ति जिसके धार्मिक विचार इतने अरुढ़िवादी थे कि उसे उसके अपने सहधर्मियों ने काफिर घोषित कर दिया था, अपने सम्प्रदाय का हिमायती माना गया।"[x] उलेमा सर सैयद अहमद के नज़रिये से सहमत नहीं थे, उन्होंने आधुनिक शिक्षा का कड़ाई से विरोध किया, क्योंकि पुरानी शिक्षा व्यवस्था ने उन्हें सत्ता और सम्मान दोनों दिया था। असगर अली इंजीनियर लिखते हैं, "उलेमाओं (मुस्लिम धर्मवेत्ता) ने दो कारणों से पूरी जिद के साथ अंग्रेजी शासन का विरोध किया- एक, नए धर्म निरपेक्ष कानूनों से उनकी सत्ता और सम्मान छिन गया। अंग्रेजी अदालतों ने तेजी से 'वादी' अदालतों का स्थान ले लिया।..."[xi] मुसलमानों में उलेमा अंग्रेजी शासन का सख्ती से विरोध करने वाले सबसे शक्तिशाली वर्ग के रूप में सामने आते हैं। अतः कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण उन्नीसवीं शताब्दी अंतर्विरोधों से भरी हुई थी, जिसका सबसे अधिक शिकार मुस्लिम समाज हुआ।

बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी घटना आजादी और विभाजन है। मुसलमानों के संदर्भ में यह विभाजन की त्रासदी एक सदमें का रूप अख्तियार कर लेती है; क्योंकि मुसलमानों का एक वर्ग जोकि पढ़ा-लिखा था वह तो पाकिस्तान चला गया। उसके सपने पाकिस्तान के रूप में साकार हो गये है; परंतु मुस्लिम समाज की बहुसंख्यक आबादी इसी देश में रह गयी। आगे चलकर जिसके कंधों पर विभाजन की जिम्मेदारी थोप दी गयी। यह मुस्लिम आबादी भारतीय समाज में शक और नफरत के बीच अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। हालांकि आजादी के बाद भारत ने उदारवादी नजरिए के तहत धर्मनिरपेक्षता को सिद्धांत के रूप में अपनाया। रिजवान कैसर कांग्रेस और भारतीय मुसलमानों के संबंध के विषय में कहते हैं कि, "स्वतंत्रता के बाद बँटवारे के कारण जब मुसलमान असहाय छोड़ दिए गए थे, यह मौलाना आजाद जैसे लोगों का प्रोत्साहन और पंडित जवाहरलाल नेहरू का आश्वासन था, जिसने मुसलमानों में विश्वास की भावना भरी कि देश के भविष्य में उनकी भी बराबर की हिस्सेदारी है।"[xii] इसमें कोई शक नहीं कि जब तक राजनीति के पटल पर नेहरू की मौजूदगी रही तब तक मुसलमानों ने भावनात्मक रूप से अपने को सुरक्षित महसूस किया; परंतु दुर्भाग्यवश नेहरू के ना रहने पर वोट बैंक की राजनीति के तहत हिन्दुत्ववादी नारे का जिन्न दुबारा बोतल से निकाला जाने लगा।

अतः कहा जा सकता है कि जिन समस्याओं को सर सैयद अहमद मुस्लिम समाज से दूर करना चाहते थे और जिसका आखिरी हल निकालने का दावा जिन्ना ने किया था, आजादी के बाद भी मुस्लिम समाज उन समस्याओं से जुड़ा रहा है। आजादी के बाद मुस्लिम नेताओं और रहनुमाओं ने भी इस समाज को मुख्यधारा से जोड़ने, विकास की राह पर अग्रसर करने की बजाय जज्बाती एवं मजहबी नारों को बुलंद कर उसे भरमाया है। "आजादी के तुरंत पश्चात् हुक्मरानों, मुस्लिम नेताओं व मौलवियों ने गठबंधन कर मुसलमानों को सियासत के बाजार में बेचकर फायदा तो खूब उठाया, मगर उनका भला कुछ नहीं किया।"[xiii] भारतीय राजनीति के संदर्भ में भारतीय मुसलमान हमेशा असुरक्षा की भावना के बीच रहे हैं। उनकी जरूरतों को पूरी न करके उन्हें और डराया गया है। जरूरत यह समझने की है कि एक आम मुसलमान का दुख-दर्द एक आम हिन्दू के दुख-दर्द से अलग नहीं है। इस सोच के साथ ही मुसलमान अपने को समाज की मुख्यधारा से जोड़ सकेगा, साथ ही भारतीय मुसलमान को ऐसे नेतृत्व की जरूरत है जो असल मुद्दों पर साफ-साफ बात करे। "मुसलमानों को अलग राजनीतिक नेतृत्व की बजाय एक ऐसे आंदोलन की जरूरत है जो उनकी सचमुच की तकलीफों के बारे में सोचे। उनकी गरीबी, बेरोजगारी आदि समस्याओं पर जब सोचा जायेगा तो इस समुदाय को खुद-बखुद लगेगा कि वह हर समुदाय के आम इंसान से जुड़ा हुआ है और यह सिर्फ मुसलमानों के लिए सच नहीं है। यह हिन्दू के लिए भी उतना ही सही है।"[xiv]

रंगराजन कमेटी, सच्चर कमेटी या अन्य ऐसी ही तमाम आयोगों एवं कमेटियों की रिपोर्ट भारत में रह रहे मुसलमानों की आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति का बयान करती है। इस अल्पसंख्यक समुदाय की समस्याओं को दूर करने का आज तक कोई ठोस प्रयास देखने में नहीं आता। तमाम बुद्धिजीवी, समाजसेवी संगठन एवं समाजशास्त्रीय मुस्लिम समुदाय की इस स्थिति पर चिंतित है, सबकी आम राय यही है कि यह समुदाय आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ा हुआ है।

3. निष्कर्ष (Findings) :-

मध्यकालीन मुस्लिम दो हिस्सों में बँटा था, पहला, अशराफ इस श्रेणी में अप्रवासी कुलीन मुसलमान थे, दूसरा अजलाफ इस श्रेणी में निम्न वर्ग आता था जिन्होंने धर्मान्तरण के बाद इस्लाम कबूल किया। मध्यकालीन मुस्लिम समाज में स्थानीय मुसलमानों को कभी बराबरी का दर्जा नहीं मिला और ना ही उनकी नियुक्ति दरबार में उच्च पदों पर होती थी। यह वर्ग हमेशा ही सत्ता और उसकी सुख- सुविधाओं से दूर रहा है। चाहे मध्यकाल हो, या फिर आधुनिक काल, या फिर आज़ादी के बाद का हिंदुस्तान। यह वही तबका है जोकि बँटवारे के बाद भारत में ही रह गया; क्योंकि पाकिस्तान अभिजात्य वर्गीय मुसलमानों एवं पढ़े लिखे तरक्की आफता मुसलमानों का सपना था, जिसमें ना तो इस वर्ग की कोई भूमिका थी और ना ही इसकी हिस्सेदारी मानी गई। यह वह वर्ग है जिसमें सदियों से हिन्दू- मुसलमान दोनों समुदाय आपस में मिलजुल कर रह रहे थे। यह वही वर्ग है जिसने सामाजिक सम्मान की उम्मीद में धर्मान्तरण कर शासन के धर्म को कबूल किया था। ऐतिहासिक तथ्यों के संदर्भ में देखें तो इस वर्ग को ना तो सामाजिक सम्मान प्राप्त हुआ और ना ही सत्ता में इनकी कोई उपस्थिति थी। तथाकथित निम्न जाति के मुसलमानों को ना तो सम्भ्रांत मुस्लिम समाज ने अपनाया और ना ही बराबरी ही दी। जिसके फलस्वरूप मुस्लिम समाज का यह तबका सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से पिछड़ गया।

संदर्भ ग्रंथ (References) :-

1. मुबारक अली, संस्करण 2010, इतिहासकार का मतान्तर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.
2. सतीश चन्द्र, प्रथम संस्करण 1990, मध्यकालीन भारत, एन.सी.आर.टी., दिल्ली.
3. एम.एन.राय, द्वितीय संशोधित संस्करण-2014, इस्लाम की ऐतिहासिक भूमिका, वाग्देवी प्रकाशन.
4. इरफान हबीब (संपा. व अनु.) रमेश रावत, तीसरा संस्करण-2013, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली.
5. सुमित सरकार, तेरहवीं आवृत्ति 2014, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.
6. असगर अली इंजीनियर, संस्करण 2003, साम्प्रदायिकता: इतिहास और अनुभव, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद.
7. संपा. राजकिशोर, संस्करण 2004, भारतीय मुसलमान: मिथक और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
8. हंस, अगस्त 2003.
9. फिरोज बख्त अहमद, मुसलमानों को डर कैसा? नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 12 सितम्बर, 2000.

---

i एम.एन. राय, इस्लाम की ऐतिहासिक भूमिका, वाग्देवी प्रकाशन, द्वितीय संशोधित संस्करण 2014 ई., पृष्ठ 13.

ii मुबारक अली, अनु. प्रेम कपूर, इतिहासकार का मतान्तर, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2010, पृष्ठ 32.

iii सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, एन.सी.आर.टी., प्रथम संस्करण, 1990, पृष्ठ 50.

iv वही, पृष्ठ 181.

v एम.एन. राय, इस्लाम की ऐतिहासिक भूमिका, पृष्ठ 88.

vi इरफान हबीब (संपा. व अनु.) रमेश रावत, भारतीय इतिहास में मध्यकाल, गं्रथ शिल्पी, तीसरा संस्करण-2013, पृष्ठ 157.

vii मुबारक अली, (अनु.) प्रेम कपूर, इतिहासकार का मतान्तर, पृष्ठ 73.

viii वही, पृष्ठ 52.

ix वही, पृष्ठ 78.

x सुमित सरकार, आधुनिक भारत, राजकमल प्रकाशन, तेरहवीं आवृत्ति 2014, पृष्ठ 95.

xi असगर अली इंजीनियर, साम्प्रदायिकता: इतिहास और अनुभव, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2003, पृष्ठ 52.

xii हंस, अगस्त 2003, पृष्ठ 30.

xiii फिरोज बख्त अहमद, मुसलमानों को डर कैसा? नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 12 सितम्बर, 2000.

xiv संपा. राजकिशोर, भारतीय मुसलमान: मिथक और यथार्थ, वाणी प्रकाशन, संस्करण 2004, पृष्ठ 146.